Toppersnotes
Unleash the topper in you

JPSC

State Civil Services

Jharkhand Public Service Commission

(Preliminary & Main)

पेपर - 1 भाग - 1

भारत एवं झारखण्ड का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

JPSC

भारत एवं झारखण्ड का इतिहास

विषय-सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2.	वैदिक काल	9
3.	मगध साम्राज्य	15
4.	मौर्य साम्राज्य	22
5.	मौर्योत्तर काल	35
6.	गुप्तकाल	54
7.	गुप्तोत्तर काल	64
8.	अरबों द्वारा सिंध की विजय	82
9.	सुलेमान महमूद गजनवी की विजय	88
10.	दिल्ली सल्तनत	91
	• खिलजी वंश	93
	• सैयद वंश	98
	• लोदी वंश	99
11.	सूफीवाद	106
12.	मुगलकाल	108
13.	मराठों का उत्थान एवं क्षेत्रीय शक्तियों का उत्थान	121
14.	यूरोपवासियों का आगमन	129
15.	आंग्ल फ्रांसिसी संघर्ष	133
16.	ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार	142
	• बंगाल	143
	• मैसूर	146
	• मराठा पेशवा	149
	• पंजाब	152
	• अवध	153

17. ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियाँ 154
18. भारतीय प्रतिक्रियाँ 157
- प्रमुख जनजातीय विद्रोह 159
- किसान विद्रोह 160
19. 1857 का विद्रोह 165
20. सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन 170
21. ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियाँ 182
- हस्तशिल्प उद्योगों के पतन का कारण 189
22. संवैधानिक विकास 193
23. राष्ट्रीय आंदोलन 205
24. गांधी आंदोलन 222
25. भारत छोडो आंदोलन 241
26. 1945 के बाद का भारत 244
27. स्वतंत्रता पश्चात् भारत 251
28. झारखण्ड का इतिहास 266
29. प्राचीन काल में झारखण्ड 270
30. झारखण्ड के क्षेत्रीय राजवंश 279
31. झारखण्ड मे जनजातीय विद्रोह 287
32. झारखण्ड मे राष्ट्रीय आंदोलन 297
33. झारखण्ड मे विभिन्न शासन व्यवस्थाएँ 312

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है ।
- 1826–चार्ल्स मेसन ने सर्वप्रथम इस पर प्रकाश डाला ।
- 1853–अलेक्जेंडर कनिंघम ने हड़प्पा का सर्वे किया ।
- 1856–जॉन बर्टन एवं विलियम बर्टन लाहौरी से कराची के मध्य रेलवे लाइन बिछा रहे थे एवं उन्होनें अनजाने में हड़प्पा की ईंटों का प्रयोग किया ।
- 1856–अलेक्जेंडर कनिंघम ने दूसरी बार हड़प्पा का सर्वे किया ।
- 1861–भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना ।
- गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग के समय, अलेक्जेंडर कनिंघम को ए. एस. आई. का जनक कहलाता है ।
- 1921–सर जॉन मार्शल ने दयाराम साहनी को हड़प्पा में उत्खननन करने हेतु नियुक्त किया ।
- 1922–सर जॉन मार्शल ने राखालदास बनर्जी को मोहनजोदड़ो का उत्खननकर्ता नियुक्त किया ।
- 1924–सर जॉन मार्शल ने सिन्धु घाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता की घोषणा की
- इतिहासकार पीग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिन्धु घाटी सभ्यता की जुड़वाँ राजधानी कहा है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

विस्तार :-

मांडा (कश्मीर चिनाब नदी)

दास्क नदी
सुत्कागेडोर
(बलूचिस्तान)

आलमगीर (यू.पी.)
हिण्डन नदी

दैमाबाद (एम. एच.)
प्रवरा नदी

काल:-

- समय का निर्धारण सी–14 पद्धति से किया जाता है ।
- 2600-1900 BC- नई NCERT के अनुसार
- 2350-1750 BC- पुरानी NCERT के अनुसार
- 3250-2750 BC-सारगोन अभिलेख के अनुसार (म. एशिया)

स्थल

1. हडप्पा

स्थिति :-

- मोंटगोमरी जिला (PB, Pak.)
- वर्तमान में शाहीवाल जिलें में है।
- रावी नदी के तट पर
- उत्खननकर्ता– दयाराम साहनी

(i) R-37 कब्रिस्तान
(ii) विदेशी की कब्र
(iii) इक्का गाडी
(iv) श्रृंगार पेटिक
(v) स्वास्तिक का निशान
(vi) नदी के तट पर 12 अन्नागार मिलते है जो दो लाइनों में है ।
(vii) पास में अनाज साफ करने का चबूतरा मिलता है ।
(viii) पास मे श्रमिक आवास भी मिलते है ।

2. मोहनजोदडो

स्थिति – लरकाना (सिन्ध, पाकिस्तान)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

- मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थत्रमृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार

(a) आकार :- 39×23×8 ft.
(b) इसके उत्तर व दक्षिण में सीढियाँ बनी हुई है ।
(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है ।
(d) इसके उत्तर दिशा में 6 वस्त्र बदलने के कक्ष है ।
(e) तीन तरफ बरामदे है ।
(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए है ।
(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
(h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते है ।
(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे ।

(j) सम्भवतया यहां धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ।

(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(j) विशाल अन्नागार

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपडे के साक्ष्य

(v) हाथी का कपालखण्ड

(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है ।

(a) यह नग्न है ।

(b) इसने एक हाथ में चूडियाँ पहन रखी है ।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है ।

(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

(i) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

3. लोथल

स्थिति गुजरात भोगवा नदी के किनारे उत्खननकर्ता S.R. राव (रंगनाथ राव) यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dackyard) मिलता है ।

(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।

(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना

(iii) चावल के साक्ष्य

(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है ।

(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ

(vi) चक्की के दो पाट

(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है । (एकमात्र)

4. धौलावीरा

उत्खननकर्ता– रवीन्द्र सिंह बिष्ट

- यह शहर किसी नदी के किनारे स्थित नहीं है ।
- यह शहर तीन भागों में विभाजित है :–

(i) पूर्व – यहाँ से 16 कृत्रिम जलाशय मिलते है ।

(ii) मध्य – स्टेडियम के साक्ष्य

(iii) पश्चिम – सूचना पट्ट जो पॉलिशयुक्त है ।

5. चुन्हदड़ो

स्थितित्र सिन्ध (पाकिस्तान)

उत्खननकर्तात्र N.G. मजूमदार इनकी हत्या डाकुओं ने कर दी थी । यह एक औद्योगिक नगरी थी ।

(i) मनके बनाने के कारखाने मिलते है ।

(ii) कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य

6. सुरकोटडा/सुरकोटदा

(i) घोडे की हड्डियाँ
सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

7. कुनाल (HR)

(i) चाँदी के दो मुकुट

8. दैमाबाद (MH)

(i) धातु का स्थान

9. रोजदी (गुजरात)

(i) हाथी के साक्ष्य

10. रोपड (PB)

(i) मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के सदस्य

11. कालीबंगा

(i) एक खोपडी जिसमें 6 छेद किए गए है अर्थात् इन लोगों को शल्य चिकित्सा का ज्ञान था।

नगर नियोजन

- यह विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- यह अपनी विशिष्ट नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध है ।
- नगर दो भागों में बँटे हुए होता था ।
  (i) पूर्वी भाग-यह आवासीय भाग होता था ।
  (ii) पश्चिमी भाग- यह हिस्सा दुर्गीकृत होता था एवं ऊँच टीले पर स्थित होता था ।
- सडके एक दूसरे को समकोण पर काटती थी ।
- शहर ग्रिड पैटर्न पर बसे हुए होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर नहीं खुलते थे ।

अपवाद– लोथल

- एक घर में सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोई, आँगन होता था ।
- उन्हें सीढ़ियों का भी ज्ञान था ।
- कुछ घरों से कुओं के साक्ष्य भी मिलते हैं ।
- मोहनजोदड़ो से लगभग 700 कुएँ प्राप्त होते हैं ।
- इन नगरों में उत्कृष्ठ जल निकासी व्यवस्था होती थी ।
- मुख्य मार्ग पर नालियों को साफ करने के लिए मेन हॉल होता था ।
- नालियों को ईंटों से ढका जाता था ।
- सामान्यतः पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे ।
- ईंटों का आकार 4×2×1 होता था ।

राजनैतिक स्थिति

- जानकारी का अभाव है ।
- सम्भवतया पुरोहित वर्ग के पास में शासन रहा होगा ।
- सम्पूर्ण सिन्धु घाटी सभ्यता में एक ही प्रशासनिक व्यवस्था रही होगी ।

सामाजिक स्थिति

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागो में विभाजित था ।
  (i) पुरोहित वर्ग
  (ii) व्यापारी वर्ग
  (iii) किसान वर्ग
  (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्र में मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।
- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा में हथियार मिलते हैं ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एंव जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था ।
  (i) पूर्ण शवाधान
  (ii) आंशिक शवाधान
  (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म में विश्वास करते थे ।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

धार्मिक स्थिति

- प्राकृतिक बहुदेववाद में विश्वास करते थे ।
- पुरूष एवं महिला देवताओं को पूजते थे ।
- इस काल में देवताओं की मूर्तियाँ मिलती है लेकिन मन्दिर बनना आरंभ नहीं हुए थे ।
- ये अन्धविश्वासी थी ।
- ये जादू, टोने, टोटके में विश्वास करते थे ।
- बलि प्रथा में विश्वास करते थे ।
- कालीबंगा से हवनकुण्ड मिलते है ।
- यह वृक्ष पूजा, जल पूजा, लिंग पूजा योनि पूजा में विश्वास करते थे ।
- मोहनजोदडो से एक मुहर मिलती है जिस पर ''आद्य शिवा'' का चित्र मिलता है ।
- सर जॉन मार्शल ने इन्हें पशुपतिनाथ कहा है ।

आर्थिक स्थिति

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हें बडे बाजारों/शहरों में बेचा जाता था ।
- गेहूं, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते है ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पन स्थल है ।
- शोर्तुगई Oxus River के किनारे (अफगानिस्तान) से नहरो के साक्ष्य मिलते है ।
- धौलाबीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते है ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नही थे ।
- विदेशी व्यापार होता था।
- सारगोन अभिलेख में सिन्धु घाटी सभ्यता को ''मेलुहा'' कहा गया है।
- मेलुहा नाविकों का देश है ।
- मेलुहा हाजा पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व में प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।

- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- तांबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (पाकिस्तान) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं ।

लिपि

- इन्हें लिपि का ज्ञान था ।
- यह भाव चित्रात्मक लिपि थी ।
- यह दांये से बांये लिखी जाती थी ।
- इसे गोमूत्राक्षर लिपि भी कहा जाता है ।
- इसमें 375.400 भाव मिलते हैं ।
- इसे अभी तक पढा नहीं गया है ।

मूर्तियाँ एवं मुहरें

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती है ।
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडो से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरें वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
  (i) मुहरों पर एकसिंगा (एक शृंगी– सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदडो व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरे प्राप्त होती है ।
  (ii) कूबड वाला सांड के चित्र

सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के कारण

1. गार्डन चाइल्ड व मार्टीमर व्हीलर के अनुसार - आर्यों का आक्रमण
2. S. R. राव. एस जॉन मार्शल व मैके के अनुसार - बाढ
3. एस. जॉन मार्शल के अनुसार - प्रशासनिक शिथिलता
4. अमलानन्द घोष के अनुसार-जलवायु परिवर्तन

5. U.R. केनेडी के अनुसार - प्राकृतिक आपदा

6. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार - नदियोंने अपना रूख बदल दिया ।

निष्कर्ष- इतनी विशाल सभ्यता के पतन के लिए बहुत सारे कारण जिम्मेदार/उत्तरदायी रहे होंगें ।

कालीबंगा, राखीगढी, (HR) धौलावीरा - पूर्व हडप्पाकालीन स्थल

रंगपुर, रोजदी - उत्तर हडप्पाकालीन स्थल

वैदिक काल

वैदिक काल/संस्कृति (1500-600 ई.पू.)

↓

आर्यों का काल

↓

आर्य अर्थात् 'श्रेष्ठ'

- प्रारंभिक वैदिक (1500–1000 ई.पू.)
  - स्त्रोत
    - Only Rigved (R)
    - OCP
- उत्तरवैदिक (1000–600 ई.पू.)
  - स्त्रोत
    - 3 वेद – (S), (Y), (A)
    - सहायक ग्रंथ
      - ब्राह्मन ग्रंथ
      - आरण्यक
      - उपनिषद्
    - PGW

प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)

- आर्य साम्राज्य
  - आर्य कौन थे।
  - पहचान
- भारत में प्रारंभिक निवास स्थान
- स्त्रोत ऋग्वेद से परिचय
- सामाजिक जीवन
- राजनीतिक जीवन
- आर्थिक जीवन
- सांस्कृतिक जीवन धर्म

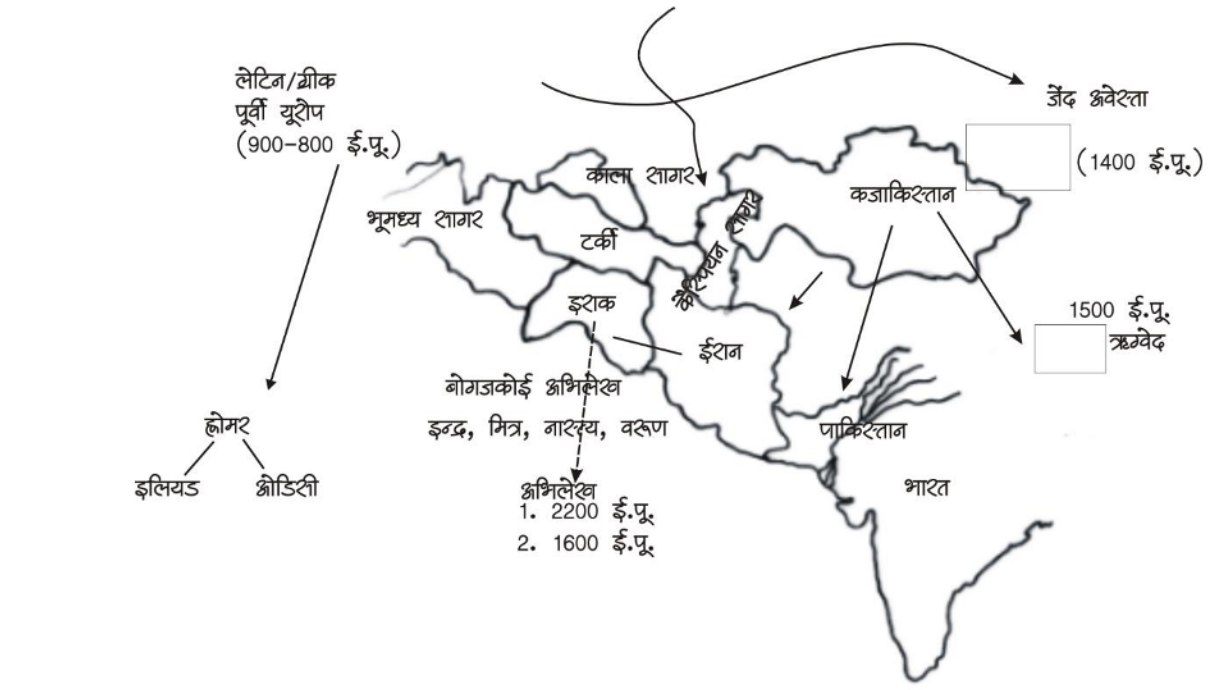

आर्य कौन थे ? उनका मूल निवास स्थान क्या था ? उनकी पहचान क्या थी ? यह सभी मुद्दे आर्य समस्या के रूप में जाने जाते हैं ।

वर्तमान में आर्य शब्द का अर्थ नस्ल जाति या श्रेष्ठता के रूप में नहीं माना जाता । अब माना जाता है कि आर्य वे थे जो यूरोपीय (Indo Europian) भाषा परिवार की भाषाएँ बोलते थे । एक जैसी संस्कृति का पालन करते थे तथा 1500 ई.पू. के आस-पास पूर्वी यूरोप से भारत के बीच रहते थे ।

आर्यों की पहचानः-

आर्यों के पहचान की कई विशेषताएँ मानी जाती है -

1. घोडे का प्रयोग
2. युद्ध रथ का प्रयोग
3. आरा वाले (तीलियों वाले) पहियों का प्रयोग (पहिया हडप्पा में भी है । लेकिन वहां पहिया ठोस है आरा वाला नहीं)
4. दाह संस्कार करना
5. यज्ञ वेदी, अग्निपूजा एवं बलि देना
6. सोमरस का पान करना (वर्तमान इफ्रेडा पौधे को कई विद्वान सोमरस मानते हैं ।)

आर्यों का मूल निवास स्थान

इस बारे में भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अलग-अलग मत दिये है :-

विद्वान	मत
1. पेंका	जर्मनी
2. सर गेल्स	डेन्यूब नदी
3. तिलक	उत्तरी ध्रुव
4. दयानंद सरस्वती	तिब्बत
5. अविनाश चंद्र दास	सप्त सैन्धव प्रदेश
6. मैक्समूलर (जर्मनी)	मध्य एशिया

यह सबसे मान्यता प्राप्त मत है क्योंकि इसे आंद्रोनोव संस्कृति का पुरातात्विक सहयोग प्राप्त है ।

भारत में प्रारम्भिक निवास स्थान :- प्रारम्भिक आर्य आज के अफगानिस्तान से भारत के पंजाब, हरियाणा के बीच मुख्यतः रहते थे । उन्होंने ऋग्वेद में इस क्षेत्र की स्थलाकृतियों (नदी, पर्वत) आदि की चर्चा की है । अतः इसी आधार पर ऐसा माना जाता है ।

निवास क्षेत्र

अफगानिस्तान के क्षेत्र

ऋग्वेद में अफगानिस्तान की कई नदियों की चर्चा है जो कमोवेश आज भी उसी नाम से जानी जाती है ।

1. गोमल (गोमति)
   वर्तमान नदियों से तुलना की जाती
2. सुवास्तु (स्वात)
3. कुभा (काबुला)
4. कुर्रम (क्रुमु)

भारत-पाकिस्तान के क्षेत्र

इसी क्षेत्र को आर्य सप्तसैन्धव देवयोगी प्रदेश कहते हैं । यहाँ की नदियों की चर्चा करते है जिनकी

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1. सिन्धु	सिंधु-सर्वाधिक बार चर्चा
2. वितस्ता	झेलम
3. अस्कनी	चेनाब
4. युरूवणी	रावी
5. विपाशा	व्यास
6. शतुद्री	सतलज
7. सरस्वती	विलुप्त

नदीतमा, मातेतमा

आर्यों ने हिमालय को हिमवंत तथा मुजवंत कहा है । लेकिन आर्य ऋगवैदिक काल में भारत के भीतरी क्षेत्रों से परिचित नहीं थे । ऋग्वेद में गंगा यमुना की एक से दो बार चर्चा मिलती है । उन्होंनें विंध्य पर्वत, नर्मदा नदी का उल्लेख नहीं किया है । वे अरब सागर तथा बंगाल की खाडी से परिचित नही थे ।

ऋग्वेद से परिचयः- इसकी रचना महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास द्वारा मूलतः की गई थी। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति की तुलना में लिखा गया ग्रंथ है। यह पुजारी परिवार द्वारा संग्रहित प्रार्थनाएँ है । इसमें कुल 1028 सूक्त मिलते हैं। 250 – 300 के बीच (इण्डो-यूरोपियन) शब्द मिलते हैं। यह पुस्तक दस मंडलों (Chapter) में विभाजित है ।
जिसमें 2 से 7 सर्वाधिक प्राचीन है ।

मण्डल	मुख्य बातें
1st	जुआ
2nd	इसमें कृषि क्रियाओं पर बल दिया गया है ।
3rd	गायत्री मंत्र की चर्चा मिलती है । जिसकी रचना विश्वामित्र ने की थी ।
4th	कृषि अनुष्ठानों पर बल
5th	अग्नि तथा घोडे का महिमामंडन **Note** : ऋग्वेद की शुरूआत अग्नि की स्तुति से होती है ।
6th	इसमें 'हरियूपिया' शब्द की चर्चा है ।
7th	इसमें दस राजाओं के युद्ध तथा वरुण देव की पूजा की चर्चा है ।

8th अनार्यों का उल्लेख

9th यह मंडल सोम को समर्पित है। एक प्रसिद्ध भाषण "मैं कवि हूँ। मेरे पिता वैद्य है तथा मेरी माता अनाज पीसती है ....." की चर्चा है।

10th
a. इसमें एकतत्ववाद, बहुदेववाद तथा सर्वेश्वरवाद का उल्लेख है।
b. सत्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि 'एकमसद् विप्र बहुधा वदन्ति'
c. समस्त विश्व को एक ही गाँव मानते हुए 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की चर्चा है।
d. सरस्वती वन्दना, नदी स्तुति, विवाह (इसे संस्कार माना गया है), नाटक (नाटक संवाद में) की चर्चा है।
e. इस मंडल के एक सूक्त पुरुष सूक्त में वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति का सिद्धान्त दिया गया है।
f. इसमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति पर भी प्रकाश डाला गया है। (नासदीय सूक्त में)

समाज :- ऋग्वैदिक समाज मूलतः कबाइली समाज था। आर्य दो सामाजिक समूहों की चर्चा करते है -

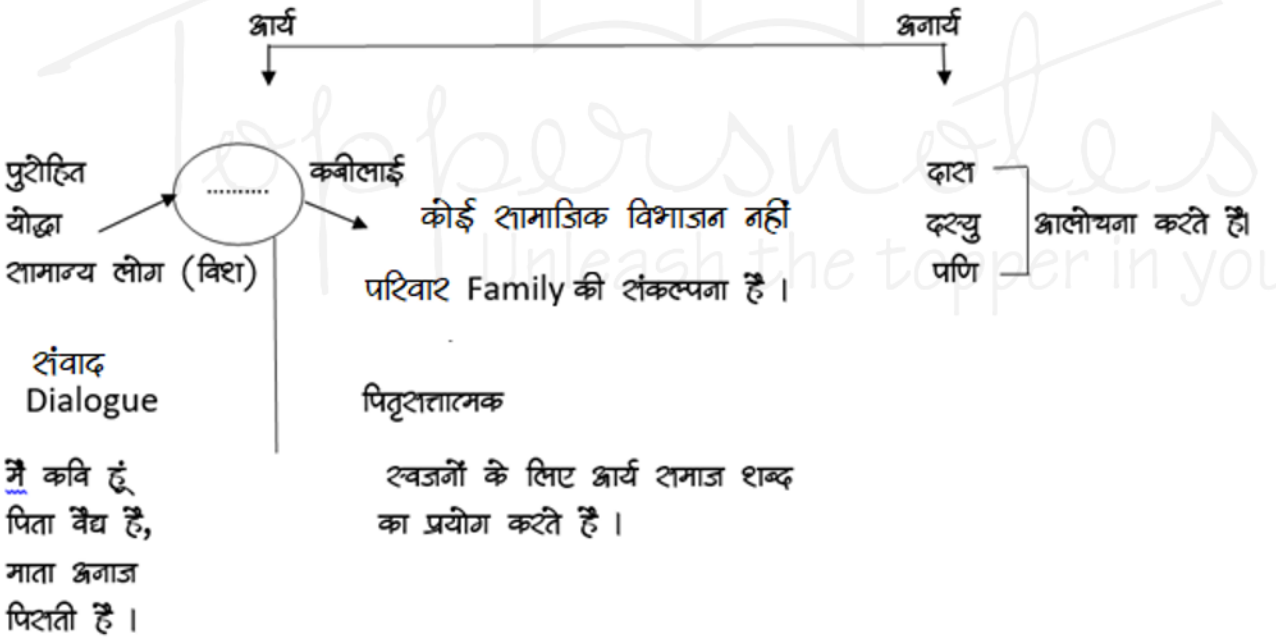

महिलाओं की स्थिति :- ऋग्वैदिक समाज में महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी थी। जो निम्न है -

(1) महिलाओं को पुरूषों के समान शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। अनेक विदुषी महिलाओं की चर्चा मिलती है जिन्होंनें वैदिक मन्त्रों की रचना की थी। जैसे - अपाला, घोषा, विश्ववारा, लोपामुद्रा आदि।
(2) यज्ञ में महिलाएं पुरुषों के साथ बराबर की भागीदार होती थी।
(3) सभासमिति में उनका प्रवेश था। राजनीतिक निर्णय की प्रक्रिया में वे भागीदार थी।
(4) महिलाओं का विवाह कम आयु में न होकर यौवनारम्भ की आयु में होता था।

कबीलाई प्रथा : समाज में बहु विवाह का प्रचलन था जिसमें बहुपतित्व तथा बहुपत्नित्व दोनों प्रचलित था। समाज में नियोग प्रथा भी विद्यमान थी ।

सामाजिक संघर्ष :- विभिन्न कबीलों (आर्य, अनार्य) में हितों को लेकर संघर्ष होता रहता था । इसमें 10 राजाओं का युद्ध काफी प्रसिद्ध है ।

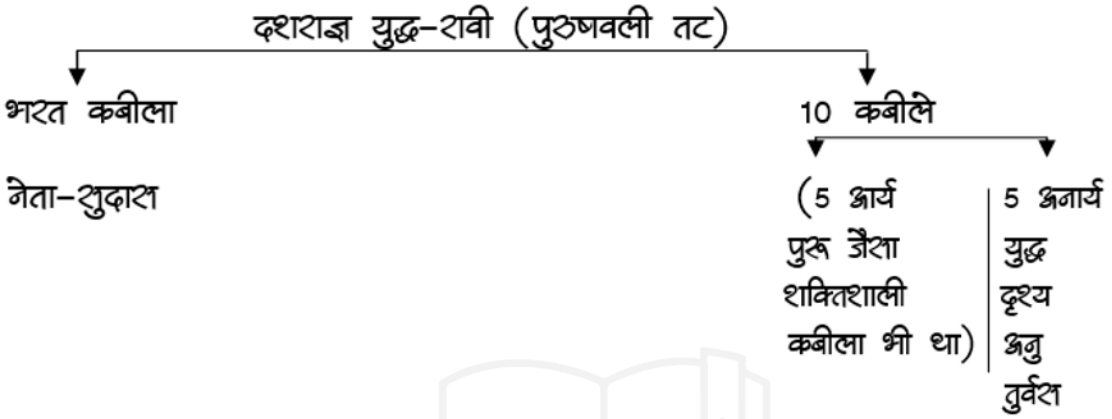

युद्ध में भरत कबीला विजयी हुआ ।

ऋग्वैदिक राजनीतिक जीवन :-

राजनीति मूलतः सरदार तन्त्रात्मक थी ।

कबीले का मुखिया सरदार होता था जो राजा एवं राजन्य जैसी उपाधि धारण करता था। उसका पद भी आनुवांशिक था लेकिन उसकी हैसियत वास्तविक राजा जैसी नहीं थी । क्योंकि उसके पास अधिकारी तंत्र, निजी सेना, न्यायिक तंत्र आदि नहीं थे । पुरोहित एवं सेनानी जैसे अधिकारियों की चर्चा मिलती है । लेकिन ये खास महत्व के नहीं थे । सरदार कबीलों पर कर नहीं लगाता था। लोग स्वेच्छा से उसे बलि (भेंट) देते थे ।

प्रजातान्त्रिक परिषदें :- राजनीति में प्रजातांत्रिक परिषदें विद्यमान थी । जो निम्न है -

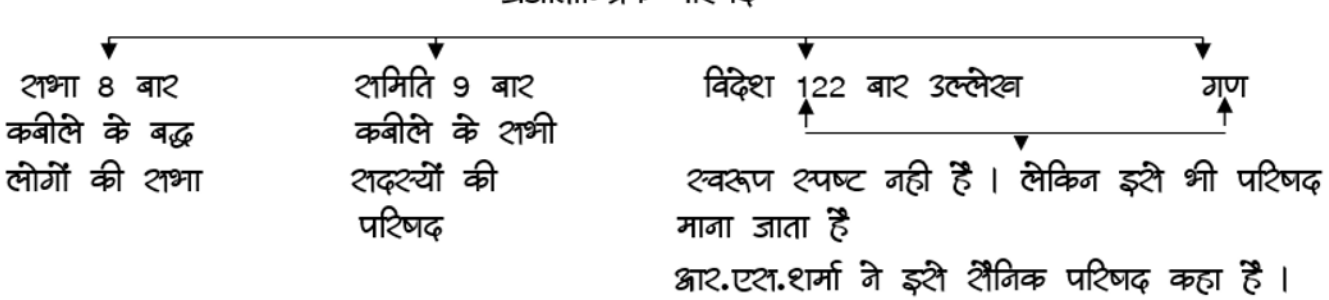

उपरोक्त परिषदों में भारतीय प्रजातंत्र का प्रारंभिक बीज दिखाई देता है । इनमें लोग एक जगह इकट्ठा होकर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते थे, आम सहमति से समान राय बनाई जाती थी ।

ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था

पशुपालन

मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। आर्य मुख्यतः गाय, बकरी, घोडों आदि का पालन करते थे । गायों का काफी महत्व था । वे धन की मानक थी। गायों के लिए बडे-बडे संघर्ष हो जाते थे। गाय इतनी महत्वपूर्ण थी लेकिन इनके आगे पीछे कई शब्द विकसित हो गय जैसे-पुत्री-दूहित्रि गोधूलि-समय की माप, गविष्ठि-युद्ध गोप- राजा

कृषि

सोना चाँदी, कांसा,ताँबा, पीतल, रत्नकार मृदभांड बनाने वाले कुम्हार (कलाल) तथा टोकरी बनाने वालों की चर्चा मिलती है
नोट : ऋग्वेद में 'अयस' शब्द मिलता है । इसका अर्थ गैर लौह धातु से लगाया जाता है ।
उत्तरवैदिक काल में 'श्याम अयस एवं कृष्ण अयस् शब्द आया है । इसे लौहा माना जाता है ।

शिल्प व्यवसाय

यह द्वितीयक व्यवसाय था । मुख्य फसल यव(जौ) थी । आर्यों को जुताई,बुवाई, कटाई मौसम आदि की जानकारी थी । कृषि महत्व का पेशा नहीं था ।

गोमत - धनी व्यक्ति

ऋग्वैदिक धर्मः-

विशेषताएँ :

(1) धार्मिक दृष्टि से काफी विविधता मिलती है। इसमें एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, सर्वेश्वरवाद सबका उल्लेख है।
(2) आर्य भारी संख्या में देवी-देवताओं की पूजा करते थे। यास्क ने इन्हें तीन श्रेणियों (भूस्थानीय, आकाश एवं अंतरिक्ष के देवता) में बाँटा है ।
(3) आर्यों के प्रमुख देवताओं में इन्द्र (वर्षा तथा वीरता के परिचायक), अग्नि (धरती के देवता, मनुष्यों व देवताओं के बीच मध्यस्थ देवता वेदों की शुरूआत इन्हीं की वन्दना से होता है ।) वरुण (जल के देवता, ऋत/नैतिक नियम के संचालक), नासत्य (डॉक्टर देवता) मिल (इनका अधिकांश उल्लेख वरुण के साथ जोडी के रूप में आया है) आदि महत्वपूर्ण थे ।
(4) आर्य देवियों की भी पूजा करते थे, जिसमे उषा, अदिति, निशा आदि मुख्य थी। लेकिन इनका महत्व पुरूष देवताओं की अपेक्षा गौण था, क्योंकि समाज पितृसत्तात्मक था ।
(5) आर्य स्तुति वन्दना, यज्ञ, प्रार्थना आदि द्वारा अपने देवी-देवताओं की पूजा करते थे ।

धर्म की प्रकृतिः

(1) आर्यों ने प्रकृति का दैवीकरण किया । जैसे- वर्षा, सूर्य इसकी रश्मियों, पर्वत व नदियों को देवी देवता बनाना ।
(2) धर्म का एक स्वरूप मानवाकृतिक (Anthromorphic) भी था । आर्यों ने मानवीय गुणों का आरोपण करके देवी-देवताओं को बनाया था ।
(3) ऋगवैदिक धर्म कर्मकाण्ड प्रधान नहीं था । यज्ञ किये जाते थे लेकिन मुख्य जोर प्रार्थना, स्तुति वंदना एवं प्रकृति पूजा पर था ।
(4) धर्म का स्वरूप यथार्थवादी भी था । क्योंकि ऋग्वैदिक आर्य स्वर्ग में जाने के लिए पूजा नहीं करते थे बल्कि इसी जीवन में भौतिक उन्नति के लिए प्रार्थना करते थे ।

ऋग्वैदिक काल

- विन्टरनिश ने ऋग्वैदिक काल के समय का निर्धारण किया है ।

आर्यो की भौगोलिक स्थिति

1. दयानन्द सरस्वती – तिब्बत
2. बाल गंगाधर तिलक – उत्तरी ध्रुव
3. डॉ पेन्का व हर्ट – जर्मनी
4. L.B.D. कल्ला – कश्मीर
5. गंगाधर झा – मध्य भारत
6. मैक्समूलर – मध्य एशिया

सर्वाधिक मान्य मत

- आर्य आरम्भ में सप्त सैन्धव में बस गए थे ।
- सिन्धु आर्यो के लिए सबसे महत्वपूर्ण नदी थी ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी ।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में सरस्वती को नदीतमा कहा गया है ।
- ऋग्वेद में सिन्धु की 5 सहायक नदियों का उल्लेख मिलता है ।

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
बिपाशा	व्यास
शतुद्री	सतलज
बितस्ता	झेलम
पुरूषणी	रावी
अस्किनी	चेनाब/चिनाब

- ऋग्वेद में अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख भी मिलता है ।
- ऋग्वेद में एक पर्वतमाला मुजवन्त (हिमालय) का उल्लेख भी मिलता है ।
- ऋग्वेद में गंगा व सरयु नदी का उल्लेख एक बार मिलता है एवं यमुना नदी का उल्लेख तीन बार किया गया है ।

आर्यो की राजनैतिक स्थिति

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था ।
- राजा को गोप /जनस्य गोप कहा जाता था ।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था ।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था ।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।